E-CONTENT FOR SEMESTER II

व्याख्यात्मकवाद - 1

(INTERPRETIVISM – 1)

BY: SWATI SOURAV
POSTGRADUATE DEARTMENT OF SOCIOLOGY
PATNA UNIVERSITY

परिचय (INTRODUCTION)

- जैसा कि आपने ज्ञान-मीमांसा के विद्यालाओं के पुराने खंडों में देखा है, वस्तुनिष्ठता, सार्वभौमिकता और कारण स्पष्टीकरण के केंद्रीय सिद्धांतों के साथ विज्ञान ने आधुनिक सामाजिक विज्ञान के गठन पर जबरदस्त प्रभाव डाला है।
- हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि 'विधि की एकता' पर पूर्ण सहमति थी। यह सच है कि उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में समाजशास्त्रीय जांच के एक प्रमुख प्रणाली के रूप में प्रत्यक्षवाद, प्रकृति और सामाजिक-सांस्कृतिक ज्ञानक्षेत्र के अध्ययन में बहुत अधिक गुणात्मक अंतर नहीं देखता था।
- लेकिन फिर भी, ऐसे कई लोग थे, जिन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक विज्ञानों में एक अलग विधा की जाँच करने का अनुरोध किया था। इसकी जड़ें प्रमुख प्रबुद्ध दार्शनिकों में से एक, इमैनुअल कांत में देखी जा सकती हैं।
- प्रकृति पर मध्यस्थता करते हुए, उन्होंने दो अलग-अलग सिद्धांतों की बात की - क) भौतिक घटक इंद्रियों द्वारा गुलाम बनाए जा रहे हैं, और ख) नैतिक घटक जो सत्य, न्याय और सौंदर्य के लिए प्रयास करता है।
- कोई आश्चर्य नहीं, ज्ञान के सामाजिक सिद्धांत का एक पहलू जिसने मानव की कंडीशनिंग के बारे में बात की, ने भौतिक / संरचनात्मक विश्लेषण को जन्म दिया, और जांच के दूसरे प्रणाली ने मनुष्य की स्वतंत्रता की बात की, जिसने स्वैच्छिकता, मानव एजेंसी, रचनात्मकता और संवेदनशीलता को महत्व दिया।
- यहाँ प्रस्थान की बात निहित है। ऐसे सामाजिक वैज्ञानिक हैं जो तर्क देते हैं कि भौतिक-रासायनिक या जैविक दुनिया में एक वस्तु के विपरीत, मनुष्य एक रचनात्मक / सजग प्राणी है, और अतः मानव समाज अर्थों का एक क्षेत्र है, न कि केवल एक 'बाहरी चीज' जो हमें विवश कर रहा हो।

To be Cont.

- दूसरे शब्दों में, यह तर्क दिया जाता है कि मानव समाज सामाजिक अभिनेताओं की ओर से रचनात्मक उपलब्धि के उत्पाद के रूप में देखा जाना चाहिए। सामाजिक विज्ञान का कार्य इन अर्थों को समझना और उनकी व्याख्या करना है।
- मैक्स वेबर इस दार्शनिक परंपरा से उभरे। वेबर (1949) के लिए, समाजशास्त्र जटिल सामाजिक क्रियाओं के व्यक्तिपरक अर्थ का एक व्याख्यात्मक अध्ययन है।उन्होंने इसे वर्स्तेहेन (*verstehen*) माना, जागरूक / व्यक्तिपरक अर्थों को समझने की एक विधि जो सामाजिक अभिनेताओं को दुनिया से जोड़ती है।
- यह इस अर्थ में था कि वेबर ने अर्थवाद से परे देखा, और प्रारंभिक पूंजीवाद की व्याख्या अर्थों के एक क्षेत्र के रूप में की, जो प्रोटेस्टेंटवाद या कैल्विनवाद के समर्थकों ने दुनिया से जुड़ा था।
- इस प्रकार, व्याख्यावादी के लिए, सामाजिक दुनिया उस अर्थ के माध्यम से, जिसे आंतरिक करने की आवश्यकता है, मिलकर बनता है और इसमे निहित है।
- जो अर्थ हम दुनिया से जुड़ते हैं वह स्थिर नहीं है, न ही सार्वभौमिक है, बल्कि हमेशा एकाधिक और चर और लगातार संशोधन और परिवर्तन के अधीन हैं।
- यहाँ शोध, उपचारात्मक सिद्धांत को रोजगार देता है; भाष्य-विषयक (hermeneutics) सिद्धांत और व्याख्या के अभ्यास को संदर्भित करता है।
- इसलिए व्याख्याकार के लिए, व्यवहार के बारे में 'तथ्य' हमेशा संदर्भ के लिए बाध्य होते हैं। वे सभी स्थितियों में सभी लोगों पर लागू नहीं होते हैं। आइए मैक्स वेबर के वर्स्तेहेन के माध्यम से विस्तार से समझने की कोशिश करें।

मैक्स वेबर: व्याख्यात्मक समझ के रूप में समाजशास्त्र (MAX WEBER: SOCIOLOGY AS INTERPRETIVE UNDERSTANDING)

- मैक्स वेबर उस समय के आसपास बढ़ता गया जब तेजी से विकास हो रहा था।
- वेबर विषय के आत्मगत अभिप्राय और उद्देश्यपूर्ण मान्य अर्थ के बीच एक तेज अंतर को चित्रित करके सामाजिक क्रिया के अपने सिद्धांत को स्थापित करना चाहते थे। वह समाजशास्त्र को सामाजिक क्रिया के दायरे से परिभाषित करना चाहते थे।
- समाजशास्त्र, वेबर के लिए, एक ऐसा विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ का प्रयास करता है, जिससे उसके पाठ्यक्रम और प्रभावों के बारे में व्याख्या हो सके।
- वेबर के अनुसार, अब तक की क्रिया सामाजिक है, जहाँ तक वह आत्मपरक अर्थ से जुड़ा हुआ है।
- किसी भी मामले में वेबर, एक निष्पक्ष रूप से 'सही अर्थ' या एक जो कुछ आध्यात्मिक अर्थों में 'सही' है, को संदर्भित करता है। यह वह है जो कार्रवाई के अनुभवजन्य विज्ञान को अलग करता है, जैसे कि उस क्षेत्र, जैसे कि न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, एस्थेटिक्स जो 'सही' और 'वैध' अर्थों का पता लगाना चाहते हैं, में हठधर्मी विषयों में से समाजशास्त्र।
- उदाहरण के लिए- वेबर के समाजशास्त्र का लक्ष्य अभिनेता की तर्कसंगत रूप से व्यक्तिपरक अर्थ से धार्मिक क्रिया को समझना है।
- वह मार्क्स और दुर्खीम के रूप में धर्म के कार्यों को तैयार करने में दिलचस्पी नहीं रखते थे। वेबर का कार्य "द प्रोटेस्टेंट एथिक्स एंड स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म" प्रोटेस्टेंटवाद की नैतिकता और पूंजीवाद की भावना के बीच संबंध का अध्ययन है।

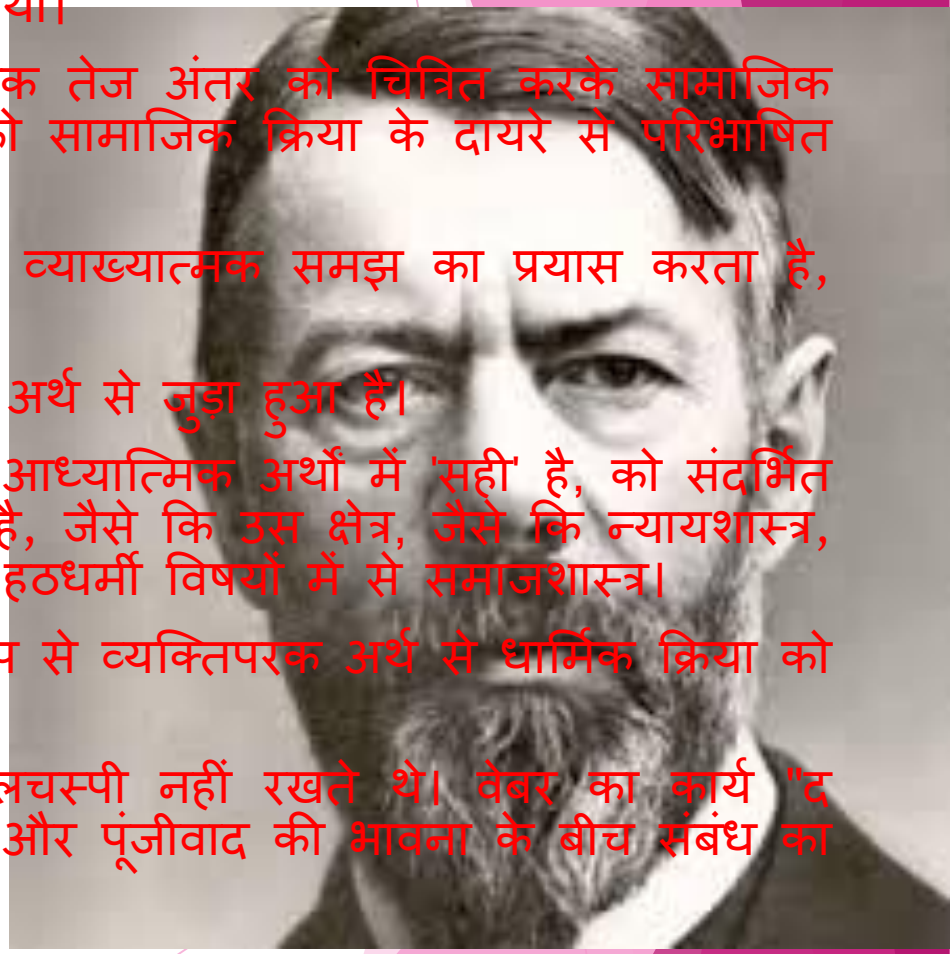

To be Cont.

- वह बेंजामिन फ्रैंकलिन के दृष्टांत में देखते हैं, जो लिखते हैं "समय ही पैसा है, यह क्रेडिट पैसा है और यह पैसा पैसा भूल जाता है"। यह लोगों को अपने सभी ऋणों का भुगतान करने के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें खुद को मेहनती और विश्वसनीय साबित करने में मदद करता है।
- वेबर इस तरह के दर्शन को एक नैतिकता और आधुनिक पूंजीवाद की भावना के रूप में देखता है। इसी तरह मार्टिन लूथर के "कॉलिंग" के विचार को भी सुधार का एक उत्पाद माना गया। इसके अनुसार लोगों का कर्तव्य है कि वे दुनिया में अपने पदों के द्वारा उन पर लगाए गए दायित्वों को पूरा करें।
- वेबर, यहां यह तर्क नहीं दे रहे हैं कि प्रोटेस्टेंटवाद पूंजीवादी भावना का कारण था, बल्कि यह योगदान कारक में से एक था। इस प्रकार, उनका मत था कि एक आयामी तर्कशक्ति वर्तमान समाज को स्थिर करने जा रही है।
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मज्ञान से संबंधित मूल्यों की भावना तेजी से लुप्त होती जा रही थी।
- हालांकि जर्मनी में देर से उभरा पूंजीवाद हॉलैंड, इंग्लैंड और अमेरिका जैसे देशों के तुलना में पीछे था। इसलिए उन्नत औद्योगिक राष्ट्रों का साथ पकड़ने के लिए जर्मनी ने राजनीतिक दलों और पूंजीपतियों के साथ एक सांठगांठ बनाया जो कि नौकरशाही और तर्कवाद के प्रसार के कारण व्यक्तियों और उनके विकास के मुक्त प्रवाह एवं उनकी रचनात्मकता को अवरुद्ध किया।
- मैक्स वेबर एक सामाजिक वैज्ञानिक की तुलना में एक ऐतिहासिक समाजशास्त्री के रूप में अधिक जाने जाने वाले, 'वर्स्तेहेन' की अवधारणा को लागू करने में अग्रणी थे।
- वेबर का विचार था कि सभी कार्यों का अध्ययन नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन केवल उनका जो किसी या किसी व्यक्ति के प्रति उन्मुख हैं। उदाहरण के लिए जब गर्म बर्तन की सतह पर गलती से हाथ रखा जाता है तो यह एक प्रतिवर्ती क्रिया है।

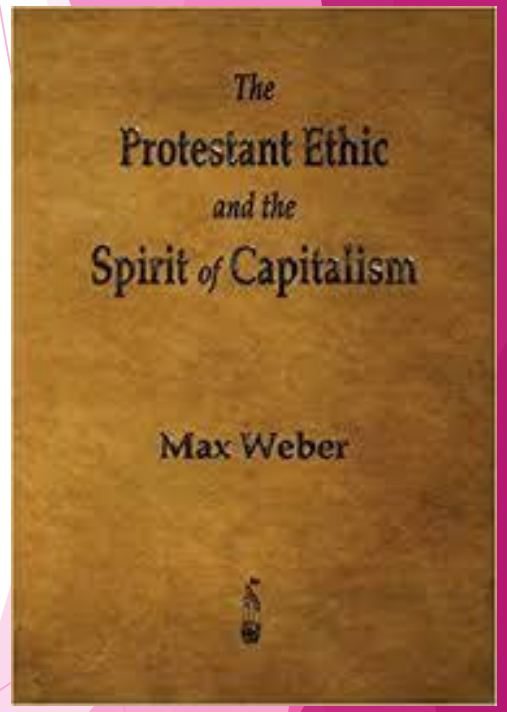

To be Cont.

- दूसरी ओर किसी व्यक्ति के साथ जुड़ी क्रिया और व्यक्तिपरक अर्थ को ध्यान में रखते हुए और सार्थक रूप से जवाब देने को अर्थपूर्ण समझ के रूप में जाना जाता है।
- वेबर का विचार था कि विधि 'वर्स्तेहेन' किसी क्रिया के व्यक्तिपरक अर्थ को समझने के साथ व्यक्ति को लैस करती है। उसी समय वेबर का यह भी विचार था कि एक क्रिया जिस समझ और अर्थ को बाहर निकालने की कोशिश करता है उसको हमेशा एक विशेष सामाजिक व्यवस्था के प्रारूप के भीतर समझा जाना चाहिए।
- उदाहरण के लिए, एक छात्र मुस्कुराता हुआ, जबकि शिक्षक एक दुखद कहानी सुना रहा है, अजीब लग सकता है। लेकिन अगर इसे करीब से देखा जाए तो हम पाएंगे कि छात्र एक लड़का है जिसने आखिरकार उस लड़की का ध्यान खींचा है जिसे वह पसंद करता है और मुस्कुराकर उसे प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है।
- इसलिए प्रतिक्रियाओं, सामाजिक व्यवथा, उस विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था में मूल्यवान मानदंडों और प्रेरणाओं को सार्थक व्याख्या के लिए ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- खैर, वेबर ने मानव एजेंसी की बात की। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनका समाजशास्त्र प्रकृति में 'व्यक्तिपरक' था। इसके बजाय, उन्होंने उद्देश्यपरक विश्लेषण के साथ व्यक्तिपरक अर्थों के व्याख्यात्मक अध्ययन को एकजुट करने की कोशिश की।
- वह विज्ञान के मूल सिद्धांतों: निष्पक्षता, मूल्य तटस्थता और कारण व्याख्या के खिलाफ नहीं थे। वह जिस पर आपत्ति जता रहे थे वह प्रकृति के साथ समाज की बराबरी करने और अर्थों के क्षेत्र को कमजोर करने का प्रत्यक्षवादी आग्रह था।
- इसलिए वह 'आइडियल टाइप्स' के बारे में बात कर रहे थे, जो सटीक वैज्ञानिक कानूनों के बजाय मॉडल की तरह थे।
- अगले भाग में हम व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की बीसवीं शताब्दी में स्थिति को समझने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद